:: प्राक्कथन ::

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध 'प्राचीन भारत में अन्तरराज्यीय सम्बन्ध' (२५० ई० से ६५० ई० तक) में प्राचीन भारतीय राजनैतिक सम्बन्ध एवं स्थिति का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इसे पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में प्रस्तावना है जो कि प्राचीन भारतीय राजनैतिक स्थिति की पृष्ठभूमि का चित्रण है।

द्वितीय अध्याय में अन्तरराज्यीय सम्बन्धों को परिचालित करने वाले प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। इन प्रमुख सिद्धान्तों का प्राचीन भारतीय राजशास्त्र विचारकों ने प्रतिपादन किया है।

तृतीय अध्याय में वाकाटक एवं गुप्तों के मध्य स्थापित सम्बन्धों का वर्णन किया गया है एवं अन्य समसामायिक राजवंशों के सम्बन्धों का वर्णन है।

चतुर्थ अध्याय में गुप्तोत्तर काल में अन्तरराज्यीय सम्बन्धों का वर्णन किया गया है।

अन्त में समस्त अध्यायों के सार को निबद्ध करके अन्तिम अध्याय उपसंहार लिखा गया है।

वीणावादिनी माँ सरस्वती के प्रसाद स्वरूप जो यह अकिंचन कृति 'प्राचीन भारत में अन्तरराज्यीय सम्बन्ध' (२५० ई० से ६५० ई० तक) शोध प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है, इसको उन्हीं हंसवाहिनी पुस्तक-धारिणी के चरणों में अर्पित करते हुये, अपने निर्देशक डा० रवीन्द्रनाथ अग्रवाल की चिरऋणी और हृदय से आभारी हूँ जिनके सतत प्रयत्न, मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं उपयोगी सुझावों के फलस्वरूप प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध बिना कोई कठिनाई के अपनी पूर्णता प्राप्त कर सका।

मैं, विभागाध्यक्ष, डॉ० श्रीधर मिश्र की आभारी हूं, जिन्होंने समय-समय पर महत्वपूर्ण सुझाव दिये, साथ ही साथ विभाग के समस्त गुरुजनों की आभारी हूं, जिन्होंने मुझे इस कार्य हेतु सहयोग दिया।

मैं डॉ० एस० के० बाजपेयी की आभारी हूं जिन्होंने उचित मार्गदर्शन दिया और निष्ठापूर्वक शोध कार्य करने का प्रोत्साहन दिया।

मैं, उन विद्वानों के प्रति कृतज्ञ हूं जिनकी कृतियों, रचनाओं, ग्रन्थों एवं शोध-पत्रों की सहायता से इस शोध -प्रबन्ध को पूर्ण कर सकी।

मैं परम श्रद्धेय अपने माता-पिता एवं बड़े भैया एवं दीदी की हृदय से आभारी हूं, जिन्होंने इस कार्य हेतु आवश्यक प्रबन्ध की पूर्णता में अपना अमूल्य योगदान दिया।

मैं, टंकक श्री रामअवतार पाल की भी आभारी हूं जिन्होंने अल्पसमय में मेरे इस शोध प्रबन्ध को टंकित कर सहयोग प्रदान किया। मैं, विभाग के अपने समस्त सहयोगियों की भी आभारी हूं, जिन्होंने समय-समय पर मुझे शोध कार्य करने में पूर्ण सहयोग दिया।

यद्यपि प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की परिसमाप्ति मैंने यथासंभव ईमानदारी एवं निष्ठा के साथ की है। अध्ययन क्षितिज असीम है, जबकि मेरा ज्ञान सीमित है यद्यपि मैंने शोध-प्रबन्ध पूर्णरूपेण श्रम द्वारा अच्छा लिखने का प्रयास किया है फिर भी यदि कुछ त्रुटियां रह गयी हों तो, विद्वान मनीषी मुझे क्षमा करेंगे।

सागर
दिनांक - 20.06.94.

प्रस्तुतकर्त्री
नीना बिड़ला
(नीना बिड़ला)
शोध छात्रा,
प्राचीन भारतीय इतिहास,
संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म०प्र०)